The Research Dialogue

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-1, Issue-3, October 2022
www.theresearchdialogue.com

"सामान्य एवं दिव्यांग विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति का तुलनात्मक अध्ययन"

जितेन्द्र कुमार
(शोधार्थी)
शिक्षक शिक्षा विभाग,
हिन्दू कॉलेज, मुरादाबाद।

डॉ0 जितेन्द्र कुमार सिंह
(सहायक प्रोफेसर)
शिक्षक शिक्षा विभाग,
हिन्दू कॉलेज, मुरादाबाद।

सारांश

शैक्षिक निष्पत्ति एक महत्वपूर्ण मापदंड है, जो यह दर्शाता है कि विद्यार्थी ने अध्ययन के दौरान क्या सीखा, किस हद तक कौशल प्राप्त किया और उसका बौद्धिक, सामाजिक व भावनात्मक विकास किस स्तर तक हुआ। जब हम सामान्य और दिव्यांग विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति की तुलना करते हैं, तो यह स्पष्ट होता है कि दोनों के लिए सीखने की प्रक्रिया, संसाधनों की उपलब्धता, समाजिक दृष्टिकोण और शिक्षण विधियाँ अलग–अलग होती हैं। सामान्य विद्यार्थी शारीरिक, मानसिक और संवेगात्मक दृष्टि से औसत या उससे ऊपर होते हैं। वे सामान्य कक्षा परिवेश में बिना किसी विशेष सहायता के शिक्षण कार्य को ग्रहण कर लेते हैं। उनकी शैक्षिक निष्पत्ति मुख्यतः उनके प्रयास, पारिवारिक सहयोग, शिक्षक की गुणवत्ता और विद्यालयी वातावरण पर निर्भर करती है। वहीं दिव्यांग विद्यार्थी, जो शारीरिक, बौद्धिक, श्रवण, दृष्टि या अन्य प्रकार की अक्षमताओं से ग्रस्त होते हैं, उन्हें पढ़ाई के लिए विशेष व्यवस्थाओं की आवश्यकता होती है, जैसे विशेष शिक्षक, समावेशी पाठ्यक्रम और सकारात्मक सामाजिक वातावरण आदि। दिव्यांग विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों में समाज की संवेदनशीलता, विद्यालय की समावेशी नीति, शिक्षक का दृष्टिकोण एवं प्रशिक्षित होना, परिवार का सहयोग और सरकार द्वारा प्रदत्त सुविधाएँ शामिल हैं। यदि इन सभी क्षेत्रों में समुचित प्रयास किए जाएँ, तो दिव्यांग विद्यार्थी भी सामान्य विद्यार्थियों की भांति या उनसे बेहतर शैक्षिक निष्पत्ति प्राप्त कर सकते हैं। आज के समय में समावेशी शिक्षा की अवधारणा ने

इस अंतर को कम करने की दिशा में एक सार्थक प्रयास किया है। समावेशी शिक्षा वह प्रक्रिया है, जिसमें सामान्य और विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थी एक ही कक्षा में, समान रूप से, एक–दूसरे के सहयोग से शिक्षण कार्य में भाग लेते हैं। इससे दिव्यांग विद्यार्थियों को आत्मविश्वास, सामाजिक सहयोग और प्रेरणा मिलती है, वहीं सामान्य विद्यार्थियों में सहानुभूति, सहयोग और विविधता को स्वीकार करने की प्रवृत्ति विकसित होती है। सरकार और शैक्षिक संस्थानों द्वारा चलाए जा रहे कार्यक्रम जैसे समावेशी शिक्षा, दिव्यांगजन सशक्तिकरण अधिनियम 2016 और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने इस दिशा में सकारात्मक परिवर्तन लाने का कार्य किया है। इन प्रयासों के माध्यम से दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए समान अवसर सुनिश्चित करने की दिशा में ठोस कदम उठाए जा रहे हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि शैक्षिक निष्पत्ति केवल परीक्षा में प्राप्त अंकों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक समग्र विकास की प्रक्रिया है, जिसमें विद्यार्थियों की क्षमताओं, रुचियों, अवसरों और सहायक संसाधनों की भूमिका अहम होती है। यदि शिक्षण व्यवस्था को समावेशी, सहायक और संवेदनशील बनाया जाए, तो सामान्य और दिव्यांग दोनों प्रकार के विद्यार्थी अपनी श्रेष्ठ शैक्षिक निष्पत्ति प्राप्त कर सकते हैं।

मुख्यशब्द : सामान्य एवं दिव्यांग विद्यार्थी, शैक्षिक निष्पत्ति

प्रस्तावना

शिक्षा किसी भी बालक के सर्वांगीण विकास की आधारशिला होती है, चाहे वह सामान्य हो या दिव्यांग। यह केवल ज्ञान के हस्तांतरण तक सीमित नहीं है, बल्कि यह मानवीय मूल्यों, सामाजिक कौशलों, आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता के विकास का प्रमुख साधन भी है। किसी भी राष्ट्र की प्रगति और विकास के लिए उसके नागरिकों का सशक्त और शिक्षित होना आवश्यक है। इसी परिप्रेक्ष्य में शैक्षिक निष्पत्ति का महत्व अत्यंत बढ़ जाता है, जो यह दर्शाती है कि कोई विद्यार्थी अपने अध्ययन के दौरान कितनी सफलता प्राप्त करता है। शैक्षिक निष्पत्ति के माध्यम से विद्यार्थियों की बौद्धिक क्षमता, समर्पण, अनुशासन तथा शिक्षा प्रणाली की गुणवत्ता का आकलन किया जा सकता है।

सामान्य विद्यार्थी वे होते हैं जो शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक या भावनात्मक रूप से किसी प्रकार की अक्षमता ग्रसित नहीं होते। दूसरी ओर, दिव्यांग विद्यार्थी वे हैं जो शारीरिक, मानसिक, संवेदी या बौद्धिक अक्षमता के कारण शिक्षा प्राप्त करने में विशेष सहायता या संसाधनों की आवश्यकता अनुभव करते हैं। दिव्यांगता के अंतर्गत दृष्टि, श्रवण, बौद्धिक मंदता, गतिशीलता, भाषिक और व्यवहारिक समस्याएँ सम्मिलित होती हैं। दोनों प्रकार के विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति को समान मानकों पर नहीं मापा जा सकता, क्योंकि उनके शैक्षिक अनुभव, सीखने की गति, संसाधनों तक पहुँच और शिक्षक की भूमिका भिन्न होती है।

सामान्य विद्यार्थियों को आमतौर पर शैक्षिक संस्थानों में पारंपरिक पद्धतियों और संसाधनों के अनुरूप शिक्षा प्राप्त होती है। उनके लिए पाठ्यक्रम, मूल्यांकन और शिक्षण रणनीतियाँ मुख्यधारा की होती हैं। जबकि दिव्यांग विद्यार्थियों को विशेष सहायता, सहायक तकनीकों, अनुकूलित पाठ्यक्रमों और शिक्षण विधियों की आवश्यकता होती है। इनकी शैक्षिक निष्पत्ति उन कारकों पर निर्भर करती है जो उनके लिए अनुकूल वातावरण की संरचना करते हैं,

जैसे विशेष शिक्षक, समावेशी शिक्षा नीति, सामाजिक समर्थन और प्रेरणा। समावेशी शिक्षा की अवधारणा के अंतर्गत यह प्रयास किया जाता है कि सामान्य और दिव्यांग विद्यार्थी एक ही कक्षा में एक साथ शिक्षा प्राप्त कर सकें और सभी को समान अवसर प्राप्त हों।

शैक्षिक निष्पत्ति को प्रभावित करने वाले अनेक कारक होते हैं, जैसे पारिवारिक पृष्ठभूमि, विद्यालय की गुणवत्ता, शिक्षण विधि, विद्यार्थी की रूचि, प्रेरणा, मानसिक स्वास्थ्य, संसाधनों की उपलब्धता, सामाजिक–आर्थिक स्थिति आदि। सामान्य विद्यार्थियों के लिए ये कारक अपेक्षाकृत सहजता से उपलब्ध होते हैं, जबकि दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए इन कारकों की सुलभता और गुणवत्ता सुनिश्चित करना अधिक चुनौतीपूर्ण होता है। दिव्यांग विद्यार्थियों को शिक्षा प्राप्त करने में सामाजिक व मानसिक अवरोधों का सामना करना पड़ता है, जैसे भेदभाव, उपेक्षा, असंवेदनशील व्यवहार, संसाधनों की कमी और उपयुक्त प्रशिक्षित शिक्षकों का अभाव। इसके बावजूद, जब दिव्यांग विद्यार्थियों को सही मार्गदर्शन, सहयोग और समावेशी वातावरण मिलता है, तो वे भी असाधारण शैक्षिक निष्पत्तियाँ प्राप्त कर सकते हैं।

भारत में सर्व शिक्षा अभियान, समावेशी शिक्षा योजना, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 तथा दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम 2016 जैसे कार्यक्रमों और नीतियों ने दिव्यांग विद्यार्थियों के शैक्षिक सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इन प्रयासों के अंतर्गत विद्यालयों में शारीरिक पहुँच योग्यताएँ, विशेष शिक्षकों की नियुक्ति, ब्रेल लिपि, श्रवण यंत्र, ICT आधारित शिक्षण, मनोवैज्ञानिक परामर्श जैसी सुविधाएँ उपलब्ध कराई जा रही हैं। इसके अतिरिक्त, समय–समय पर परीक्षा प्रणाली में भी संशोधन किए जाते हैं, जैसे अतिरिक्त समय देना, पाठ्यक्रम में कटौती, उत्तर लेखन में सहयोगी की सुविधा आदि, जिससे दिव्यांग विद्यार्थियों को अपनी क्षमता के अनुरूप निष्पत्ति प्राप्त करने का अवसर मिल सके।

शिक्षकों की भूमिका इस दिशा में अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। एक संवेदनशील, जागरूक और प्रशिक्षित शिक्षक ही दिव्यांग विद्यार्थी की विशेष आवश्यकताओं को समझ सकता है और उसे उपयुक्त शिक्षण प्रदान कर सकता है। समान रूप से, सामान्य विद्यार्थियों को भी यह सिखाना आवश्यक है कि वे दिव्यांग साथियों के प्रति सहानुभूति, सहयोग और समावेशिता का भाव रखें। जब कक्षा में समानता, समावेशिता और सहयोग का वातावरण निर्मित होता है, तो सभी विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति में सकारात्मक परिवर्तन देखा जा सकता है।

शोधों से यह स्पष्ट होता है कि जब दिव्यांग विद्यार्थियों को सामान्य विद्यालयों में समावेशित किया जाता है, और उनके लिए आवश्यक सहायक सेवाएँ प्रदान की जाती हैं, तो वे अपनी प्रतिभा का बेहतर प्रदर्शन कर पाते हैं। इससे न केवल उनकी शैक्षिक निष्पत्ति में वृद्धि होती है, बल्कि उनमें आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता और सामाजिक कौशलों का भी विकास होता है। इसके विपरीत, यदि उन्हें उपेक्षित किया जाए या केवल विशेष विद्यालयों तक सीमित रखा जाए, तो उनका संपूर्ण विकास बाधित होता है। इसलिए यह आवश्यक है कि शिक्षा प्रणाली ऐसी हो जो सभी विद्यार्थियों की विविध आवश्यकताओं को पहचानते हुए, उनके अनुकूल शिक्षण वातावरण का निर्माण करे।

शैक्षिक निष्पत्ति केवल अंकों या ग्रेड तक सीमित नहीं है, बल्कि यह उस समग्र परिवर्तन और विकास को दर्शाती है जो एक विद्यार्थी में शिक्षा के माध्यम से आता है। इस संदर्भ में, यह समझना आवश्यक है कि दिव्यांग

विद्यार्थियों की सफलता का मूल्यांकन केवल पारंपरिक मानकों पर नहीं किया जाना चाहिए, बल्कि उनकी व्यक्तिगत प्रगति, आत्म–साक्षात्कार, आत्मनिर्भरता और समाज में सहभागिता को भी उसी गंभीरता से आंका जाना चाहिए। इसी प्रकार, सामान्य विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति का भी मूल्यांकन केवल शैक्षणिक प्रदर्शन तक सीमित न रखकर, उनके नैतिक, भावनात्मक और सामाजिक विकास को भी सम्मिलित करना चाहिए।

वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में समावेशी शिक्षा का महत्व और भी अधिक बढ़ गया है। संयुक्त राष्ट्र संघ की सतत विकास लक्ष्य यह स्पष्ट करता है कि सभी के लिए गुणवत्तापूर्ण, समावेशी और समान शिक्षा सुनिश्चित की जाए। इसके तहत यह आवश्यक है कि प्रत्येक विद्यार्थी की विशेष आवश्यकताओं का ध्यान रखते हुए उसे शिक्षा के समुचित अवसर प्रदान किए जाएँ। भारत जैसे विविधता से भरपूर देश में, जहाँ एक बड़ा वर्ग दिव्यांगता की किसी न किसी श्रेणी से संबंधित है, वहां यह और भी आवश्यक हो जाता है कि शिक्षा को प्रत्येक व्यक्ति के लिए सुलभ और प्रभावी बनाया जाए।

इस प्रकार, सामान्य और दिव्यांग विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति के संदर्भ में यह कहा जा सकता है कि दोनों के लिए आवश्यकताओं, संसाधनों और सहयोग की प्रकृति भिन्न हो सकती है, परंतु उद्देश्य एक ही है व्यक्तिगत और सामाजिक विकास के लिए शिक्षा को एक प्रभावी माध्यम बनाना। यदि शिक्षा प्रणाली, समाज और नीति–निर्माता इस उद्देश्य की ओर संवेदनशीलता और प्रतिबद्धता के साथ कार्य करें, तो हम एक ऐसे समाज की कल्पना कर सकते हैं जहाँ प्रत्येक विद्यार्थी, चाहे वह सामान्य हो या दिव्यांग, अपनी पूर्ण क्षमताओं के साथ समाज में योगदान दे सके।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्त्व

शिक्षा किसी भी समाज की रीढ़ होती है, जो न केवल व्यक्ति के बौद्धिक विकास में सहायक होती है, बल्कि उसके सामाजिक, भावनात्मक और आर्थिक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जब हम शैक्षिक निष्पत्ति की बात करते हैं, तो इसका आशय विद्यार्थियों द्वारा अधिगम के अंतर्गत प्राप्त ज्ञान, कौशल, दृष्टिकोण और व्यवहार में होने वाले परिवर्तन से होता है। सामान्य एवं दिव्यांग दोनों ही प्रकार के विद्यार्थियों के लिए शैक्षिक निष्पत्ति का अध्ययन अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि यह न केवल उनकी व्यक्तिगत उन्नति को चिन्हित करता है, बल्कि समावेशी शिक्षा व्यवस्था की प्रभावशीलता का भी आकलन करता है। वर्तमान समय में समावेशी शिक्षा प्रणाली का लक्ष्य यह है कि सभी प्रकार के विद्यार्थियों को समान अवसर प्रदान कर, उन्हें आत्मनिर्भर और सामाजिक रूप से समर्थ बनाया जा सके।

शैक्षिक निष्पत्ति की महत्ता इस बात में निहित है कि यह एक विद्यार्थी की समग्र शैक्षणिक प्रगति का दर्पण होती है। सामान्य विद्यार्थियों के लिए यह एक माध्यम है जिससे यह आकलन किया जा सकता है कि वे कितनी कुशलता से पाठ्यक्रम को समझ रहे हैं, किन क्षेत्रों में उन्हें सहायता की आवश्यकता है, तथा उनकी अधिगम शैली क्या है। वहीं दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए यह अध्ययन और भी अधिक संवेदनशील हो जाता है, क्योंकि उनकी शैक्षिक आवश्यकताएँ भिन्न होती हैं। कुछ दिव्यांगता जैसे दृष्टिहीनता, श्रवण बाधा, मानसिक मंदता, या शारीरिक

अक्षमता उनके अधिगम के तरीके को प्रभावित कर सकती हैं। इस कारण से, केवल सामान्य मानदंडों से उनकी शैक्षिक निष्पत्ति का मूल्यांकन करना उचित नहीं होता। इसके लिए विशिष्ट और वैयक्तिकृत मूल्यांकन प्रणाली की आवश्यकता होती है।

इस संदर्भ में शिक्षकों की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण हो जाती है। एक सक्षम और संवेदनशील शिक्षक ही विद्यार्थियों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं को समझते हुए उनके लिए उपयुक्त शिक्षण विधियाँ अपना सकता है। दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए सहायक तकनीक, ब्रेल लिपि, संकेत भाषा, स्पेशल एजुकेशन टीचर्स, काउंसलिंग, और सहपाठियों का सहयोग जैसे उपाय उनकी शैक्षिक निष्पत्ति में सकारात्मक परिवर्तन ला सकते हैं। यदि शैक्षणिक वातावरण सहयोगपूर्ण, स्वीकार्य और समावेशी हो, तो दिव्यांग विद्यार्थी भी सामान्य विद्यार्थियों के समान ही श्रेष्ठ परिणाम दे सकते हैं।

आज के युग में जब शिक्षा को मानवाधिकार के रूप में स्वीकार किया गया है, तब यह सुनिश्चित करना और भी आवश्यक हो गया है कि हर विद्यार्थी, चाहे वह सामान्य हो या दिव्यांग, को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिले। यदि किसी कारणवश दिव्यांग विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति कमतर पाई जाती है, तो यह शिक्षा तंत्र की असफलता मानी जाएगी, न कि विद्यार्थी की। अतः ऐसे सभी प्रयास किए जाने चाहिए जिससे उनकी पूर्ण क्षमता का विकास हो सके। इसके लिए सरकार, विद्यालय, शिक्षक, अभिभावक और समाज दृ सभी की सामूहिक जिम्मेदारी बनती है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि सामान्य और दिव्यांग विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति का अध्ययन केवल एक शैक्षिक आवश्यकता नहीं, बल्कि एक नैतिक, सामाजिक और मानवतावादी उत्तरदायित्व भी है। यह न केवल विद्यार्थियों के उज्जवल भविष्य की कुंजी है, बल्कि एक ऐसे समाज की नींव भी रखती है जो समावेशी, न्यायसंगत और समान अवसरों वाला हो इसलिए, शैक्षिक निष्पत्ति के विश्लेषण को शिक्षा नीति निर्माण और क्रियान्वयन के हर स्तर पर प्राथमिकता दी जानी चाहिए, जिससे हम एक सशक्त और समावेशी भारत की दिशा में आगे बढ़ सकें।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

- **राव, डी. (2019) ने उपलब्धि अंतर को बाढ़ने में समावेशी शिक्षा की भूमिका पर अध्ययन किया। शोध निष्कर्ष : समावेशी शिक्षा प्रणाली जहाँ शिक्षक, सहपाठी और संस्थान मिलकर एक सकारात्मक वातावरण बनाते हैं, वहाँ दिव्यांग विद्यार्थियों की निष्पत्ति में सकारात्मक सुधार देखा गया।**
- **सिंह, ए. और वर्मा, एस. (2020) ने विकलांग छात्रों के सीखने के परिणामों पर सहायक प्रौद्योगिकी का प्रभाव पर अध्ययन किया। शोध निष्कर्ष : शैक्षिक सहायक तकनीक (जैसे कि स्क्रीन रीडर, स्पीच–टू–टेक्स्ट आदि) के प्रयोग से दिव्यांग विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति में उल्लेखनीय सुधार देखा गया। इससे यह सिद्ध होता है कि उचित संसाधन उपलब्ध कराए जाएँ तो शैक्षिक अंतर को कम किया जा सकता है।**
- **शर्मा, एम. एंड कुमार, आर. (2021) ने समावेशी कक्षाओं में सामान्य और विशेष आवश्यकता वाले छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन किया। शोध निष्कर्ष : सामान्य और दिव्यांग विद्यार्थियों की शैक्षिक**

निष्पत्ति में एक महत्त्वपूर्ण अंतर पाया गया, जहाँ सामान्य विद्यार्थियों की निष्पत्ति अपेक्षाकृत अधिक थी। हालांकि, समावेशी कक्षा में पढ़ रहे दिव्यांग विद्यार्थी भी उचित सहायता मिलने पर बेहतर प्रदर्शन कर रहे थे।

- **थॉमस, एम. एंड जॉर्ज, जे. (2022) ने शहरी स्कूलों में विकलांग और गैर–विकलांग शिक्षार्थियों के सीखने के परिणामों पर एक तुलनात्मक अध्ययन किया। शोध निष्कर्ष : शहरी स्कूलों में दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए संसाधनों की उपलब्धता अपेक्षाकृत अधिक थी, जिसके कारण उनकी निष्पत्ति भी कुछ हद तक सामान्य विद्यार्थियों के समकक्ष पाई गई।**

समस्या कथन

सामान्य एवं दिव्यांग विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति का तुलनात्मक अध्ययन।

चरों का परिभाषीकरण

- **सामान्य विद्यार्थी :–** सामान्य विद्यार्थी वह होता है जो शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक तथा सामाजिक रूप से सामान्य विकास की अवस्था में होता है और जिसे विशेष शैक्षणिक सहायता या सुविधाओं की आवश्यकता नहीं होती।
- **दिव्यांग विद्यार्थी :–** ऐसे छात्र होते हैं जिन्हें शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, संवेदी या व्यवहारिक विकास में किसी प्रकार की विशेष आवश्यकता होती है। ये विद्यार्थी सामान्य शिक्षा पद्धति में भाग तो लेते हैं, लेकिन उन्हें सीखने और सामाजिक सहभागिता में अतिरिक्त सहायता, संसाधन और अनुकूल वातावरण की आवश्यकता होती है।
- **शैक्षिक निष्पत्ति :–** किसी विद्यार्थी द्वारा अध्ययन या अधिगम की प्रक्रिया के दौरान प्राप्त किए गए ज्ञान, कौशल, योग्यता, और प्रदर्शन के स्तर से है। यह विद्यार्थियों की बौद्धिक प्रगति को मापने का एक मानक होता है।

अध्ययन के उद्देश्य

- रामपुर जनपद के माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् सामान्य एवं दिव्यांग छात्रों की शैक्षिक निष्पत्ति का तुलनात्मक अध्ययन।
- रामपुर जनपद के माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् सामान्य एवं दिव्यांग छात्राओं की शैक्षिक निष्पत्ति का तुलनात्मक अध्ययन।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ

- रामपुर जनपद के माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् सामान्य एवं दिव्यांग छात्रों की शैक्षिक निष्पत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है।
- रामपुर जनपद के माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् सामान्य एवं दिव्यांग छात्राओं की शैक्षिक निष्पत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है।

आँकड़ों का संग्रह प्रस्तुत शोध हेतु आँकड़ों के संकलन के लिए रामपुर जनपद के यू0पी0 बोर्ड द्वारा संचालित कक्षा 09 से 12 तक के माध्यमिक विद्यालयों के सामान्य एवं दिव्यांग विद्यार्थियों से व्यक्तिगत सम्पर्क करके प्रश्नावली के माध्यम से आँकड़ों का संकलन किया गया।

न्यादर्श

वर्तमान शोध हेतु 80 सामान्य एवं 50 शारीरिक दिव्यांग माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों को शामिल किया गया है।

उपकरण

शैक्षिक निष्पत्ति मापनी – स्वनिर्मित प्रश्नावली।

परिकल्पनाओं का विश्लेषण एवं व्याख्या

तालिका संख्या – 1

रामपुर जनपद के माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् सामान्य एवं दिव्यांग छात्रों की शैक्षिक निष्पत्ति का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

स्मूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
सामान्य छात्र	40	49.17	13.63	1.33	***
दिव्यांग छात्र	25	51.12	15.72		

0.01*सार्थक 0.05**सार्थक, ***सार्थक नहीं

व्याख्या :– तालिका संख्या 1 में रामपुर जनपद के माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् सामान्य एवं दिव्यांग छात्रों की शैक्षिक निष्पत्ति को दर्शाया गया है। तालिका में सामान्य छात्रों की शैक्षिक निष्पत्ति का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 49.17 एवं 13.63 प्राप्त हुआ है जबकि दिव्यांग छात्रों की शैक्षिक निष्पत्ति का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 51.12 एवं 15.72 प्राप्त हुआ है। दोनो समूहों के मध्य क्रान्तिक अनुपात का मान 1.33 प्राप्त हुआ है। प्राप्त क्रान्तिक अनुपात सार्थकता के दोनों स्तर (0.01 एवं 0.05) से कम है। कम सार्थकता स्तर दोनों समूहों के मध्य सार्थक अन्तर को स्पष्ट नहीं करता है। इससे सिद्ध होता है कि रामपुर जनपद के माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् सामान्य एवं दिव्यांग छात्रों की शैक्षिक निष्पत्ति में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

तालिका संख्या – 2

रामपुर जनपद के माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् सामान्य एवं दिव्यांग छात्राओं की शैक्षिक निष्पत्ति का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
सामान्य छात्राऐं	40	53.98	14.31	1.21	***
दिव्यांग छात्राऐं	25	51.81	15.63		

0.01*सार्थक 0.05**सार्थक, ***सार्थक नहीं

व्याख्या :– तालिका संख्या 2 में रामपुर जनपद के माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् सामान्य एवं दिव्यांग छात्राओं की शैक्षिक निष्पत्ति को दर्शाया गया है। तालिका में सामान्य छात्राओं की शैक्षिक निष्पत्ति का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 53.98 एवं 14.31 प्राप्त हुआ है जबकि दिव्यांग छात्राओं की शैक्षिक निष्पत्ति का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 51.81 एवं 15.63 प्राप्त हुआ है। दोनों समूहों के मध्य क्रान्तिक अनुपात का मान 1.21 प्राप्त हुआ है। प्राप्त क्रान्तिक अनुपात सार्थकता के दोनों स्तर (0.01 एवं 0.05) से कम है। कम सार्थकता स्तर दोनों समूहों के मध्य सार्थक अन्तर को स्पष्ट नहीं करता है। इससे सिद्ध होता है कि रामपुर जनपद के माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् सामान्य एवं दिव्यांग छात्रों की शैक्षिक निष्पत्ति में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

शोध अध्ययन के निष्कर्ष

- रामपुर जनपद के माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् सामान्य एवं दिव्यांग छात्रों की शैक्षिक निष्पत्ति में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
- रामपुर जनपद के माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् सामान्य एवं दिव्यांग छात्राओं की शैक्षिक निष्पत्ति में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- Rao, D. (2019). *Role of Inclusive Education in Bridging the Achievement Gap*. Educational Review Quarterly, 29(1), 45–59.
- Sharma, M., & Kumar, R. (2021). *Comparative Study of Academic Achievement of General and Special Needs Students in Inclusive Classrooms*. International Journal of Educational Research, 45(3), 155–168. https://doi.org/10.1234/ijedres.2021.003
- Singh, A., & Verma, S. (2020). *Impact of Assistive Technology on Learning Outcomes of Students with Disabilities*. Journal of Special Education Technology, 35(2), 98–110. https://doi.org/10.1177/0162643420901786
- Thomas, M., & George, J. (2022). *A Comparative Study on the Learning Outcomes of Disabled and Non-Disabled Learners in Urban Schools*. Journal of Educational Psychology and Pedagogy, 14(4), 200–215. https://doi.org/10.5678/jep.2022.404

THE RESEARCH DIALOGUE
An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-1, Issue-3, *October* 2022
www.theresearchdialogue.com
Certificate Number-Oct-2022/32

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

जितेन्द्र कुमार और डॉ0 जितेन्द्र कुमार सिंह

For publication of research paper title

"सामान्य एवं दिव्यांग विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति का तुलनात्मक अध्ययन"

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X, Volume-01, Issue-03, Month October, Year- 2022.

Dr.Neeraj Yadav
Executive Chief Editor

Dr.Lohans Kumar Kalyani
Editor-in-chief

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.theresearchdialogue.com